कोरोना का अभियुक्त

अनागत की विषम शंका भीति गुरु संदेह
क्षुधा की बहु भीड़ लेकर खड़े नीरव गेह
हो गया है मनुज भय से मनुज से ही दूर
विजनता विस्तार है सर्वत्र ही भरपूर ।।

रोग का है बुद्धि पर इतना प्रभावी त्रास
नहीं अंतिम समय में भी बंधु रहते पास
दीखता नर को नहीं सद्यः प्रभावी त्राण
रुग्ण खोते चिकित्सालय में विवश हो प्राण ।।

नहीं पैंगोलिन न चमगादड़ मनुज रिपु घोर
साथ रहते आरहे ये मनुज के चहुं ओर
विकृत जिज्ञासा मनुज की अरति का है मूल
निखिल नरता भोगती जिसकी क्रिया के शूल ।।

देखते थे गर्वयुत शिर विश्व होगा ग्राम
देख लो अब दूरियों के लोप का परिणाम
देख लो यह मात्र जीवन के लिए संग्राम
देख लो उत्कर्ष वपु के शीर्ण अवयवग्राम ।।

यही है नवतर विजेता और अनुपम शूर
हो गया नरघात में लघु आज वह तैमूर
अब चली नव रीति छिप कर क्रूर करना वार
अब अलक्षित मृतक को है सूक्ष्म आयुध धार ।।

अलक्षित आयुध प्रयोक्ता अगोचर है शस्त्र
किए बलगर्वित सकल रिपु आशु ही निःशस्त्र
आत्मरक्षा निरत सब हैं लक्ष्य मात्र बचाव
घाव करके छिप गया सकुशल अपूर्व दुराव ।।

कंठ कर अवरुद्ध लेता छीन सत्वर श्वास
हिला जिससे मनुज में ही मनुज का विश्वास
मात्र ऐसे रोग से लड़ना बचा है शेष
हो अचिर निःशेष गद हो मनीषा उन्मेष ।।

अर्थतंत्रों की हिली कुछ माह में ही नीव
खो रहे संतान अपनी जगत के बलसीव
अब न कातरता न लिप्सा भय न बस आरोप
काम आयेंगे करो बस पातकी पर कोप ।।

करो अन्वेषित गरल सरिता समुद्गम गुप्त
करो भावी योजनाएं विफल साधन लुप्त
हरो निंदित यह अमंगल जगत की गुरुभीति
पुनः हो जग में प्रतिष्ठित मानवों की रीति ।।

यदि अदंडित जगत में रहते विषम अपराध

और करने हेतु मन में जागती है साध

और चलते चक्र हिंसा लूट के निर्बाध

लोप होता सभ्यता का न्याय का अतिबाध ।।

लोक में यदि दुष्ट के रहते अदंडित कृत्य

नहीं फिर सामर्थ्यशाली जगत में आदृत्य

अब न ऐसा विश्व जिसका बने शासक एक

अतः सत्वर संगठित हों लक्ष्य जिनके नेक ।।

दिनांक : 24/05/2020

पंडित शिव कुमार मिश्र